प्रतिबिम्ब

A Monthly E-Newsletter of Rana Pratap PG College Sultanpur

वर्ष . 01 अंक . 05 अप्रैल 2024

RANA PRATAP POST GRADUATE COLLEGE SULTANPUR
CIVIL LINES-1, SULTANPUR-228001 (U.P.)
(Affiliated : Dr. Ram Manohar Lohiya Avadh University, Ayodhya)
www.rppgcollege.ac.in

संरक्षक

एडवोकेट संजय सिंह (अध्यक्ष) | एडवोकेट बालचंद्र सिंह (प्रबंधक) | प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी (प्राचार्य)

प्रधान सम्पादक

ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह 'रवि'
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी

सह सम्पादक

डॉ महमूद आलम
विभागाध्यक्ष उर्दू

डॉमंजू ठाकुर.
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति

प्रमोद श्रीवास्तव
प्रभारी कम्प्यूटर सेंटर

प्रतिनिधि

डॉ संतोष कुमार सिंह(अंश)
शिक्षा संकाय

चौरसिया गोरखनाथ
विज्ञान संकाय

डॉज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह.
कला संकाय

यशस्वी प्रताप सिंह
वाणिज्य संकाय

विद्यार्थी प्रतिनिधि

शिक्षा संकाय
सत्येन्द्र शुक्ल
(बीएड द्वितीय वर्ष)
अंशिका सिंह
(बीएड प्रथम वर्ष)
कला संकाय
रिया श्रीवास्तव
(बीए पंचम सेमेस्टर)
प्रतिमा मिश्र
(बीए प्रथम सेमेस्टर)

विज्ञान संकाय
अनुराग यादव
(बीएससी पंचम सेमेस्टर)
अनुपमा वर्मा
(बीएससी पंचम सेमेस्टर)
लक्ष्मी सिंह
(बीएससी प्रथम सेमेस्टर)
वाणिज्य संकाय
आयुष मिश्रा
(बीकाम तृतीय सेमेस्टर(

रचनायें / विचार/ समाचार / फोटो आदि भेजने का पता -
rppgcollegenewsletter@gmail.com

- लिखित सामग्री यूनीकोड या मंगल फांट में ही टाइप कर के भेजें।लिखित सामग्री फोटो, जेपीजी, पीडीएफ आदि में स्वीकार नहीं की जायेगी।
- News Letter के सम्बन्ध में किसी भी जानकारी / समस्या / सुझाव आदि के लिए अपने संकाय प्रतिनिधि से सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पादकीय

प्रधान सम्पादक

हम साल में चार बार नवरात्रि मनाते हैं । यह समय ऋतुओं के परिवर्तन का होता है। इस समय तापमान में बार-बार बदलाव होने से बीमारी होने की संभावना बढ़ जाती है। मौसमी संक्रमण के दौरान कई वायरस पनपते हैं। इस दौरान हम देवी या शक्ति के प्रति अपना सम्मान दिखाते हैं और मौसम परिवर्तन से निपटने के लिए अपनी ऊर्जा के स्तर को बढ़ाते हैं। नवरात्रि खुद को नई उर्जा से रिचार्ज करने का समय है। यह मन की बेचैनी को कम करके जागरूकता और आनंद लाता है। अनेक आचार्यों का मानना है कि उपवास भगवान को प्रसन्न करने के लिए नहीं बल्कि शरीर को शुद्ध करने के लिए किया जाता है। नवरात्रि में आपके भीतर सही समय पर सही काम करने का कौशल आता है। नवरात्रि ऐसा पर्व है जो शक्ति साधना के साथ साथ हमारे जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा भी देता है।नवरात्रि की नौ देवियां सफलता के नौ सूत्र हैं । नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा होती है।यह अडिग विश्वास की प्रतीक हैं। जब भी कोई काम शुरू किया जाय तो सबसे पहले उसमें अटूट विश्वास की ज़रूरत होती है।अगर विश्वास नहीं है तो सफलता मिलना सम्भव नहीं है। दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की आराधना की जाती है । यह अनुशासन की प्रतीक हैं।अगर हम अपने लक्ष्य के अनुसार अनुशासित नहीं हैं तो फिर उसे कभी हासिल नहीं कर सकते। तीसरा दिन मां चंद्रघंटा की साधना का दिन है। यह मन के नियंत्रण की प्रतीक हैं। हमारा दिमाग ठंडा रहे और मन सधा हुआ हो तो सफलता का मार्ग सहज हो जाता है। जब हम एक चित्त से काम करेंगे तो ही सफलता मिलेगी। चौथा दिन मां कुष्मांडा को समर्पित है। यह ज्ञान की प्रतीक हैं । किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए ज्ञान और विवेक बुद्धि की बहुत जरूरत है । बिना इसके सफलता कठिन है। पांचवां दिन स्कंदमाता का है। यह करूणा और प्रेम की प्रतीक हैं। यह बताती हैं कि सफलता का सुख शांति में होता है । इसके लिए प्रेम और करूणा जरूरी है । अक्सर हम सफलता की दौड़ में अपनी संवेदनशीलता भूलकर कठोर हो जाते हैं यह अनुचित है। छठवां दिन मां कात्यायनी की वंदना का दिन है। यह स्वास्थ्य की प्रतीक हैं। शरीर सेहतमंद हो तो मन में उत्साह होता है । मां कात्यायनी सिखाती हैं कि किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति तभी हो सकती है जब आप तन और मन से स्वस्थ हों । सातवें दिन मां कालरात्रि की पूजा होती है। यह हठ और साहस की प्रतीक हैं । किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए जिद और हौसला दोनों होना चाहिए क्योंकि हर लक्ष्य के रास्ते में कठिनाइयां आती हैं। आठवें दिन मां महागौरी की आराधना होती है। यह उज्ज्वल चरित्र की प्रतीक हैं । हम किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रहे हों हमारा चरितर् साफ होना चाहिए । अगर हमारे अंदर छल कपट जैसी भावनाएं और व्यवहार में अंहकार हो तो सफलता में कठिनाई आती है। नवां दिन मां सिद्धिदात्री को समर्पित है। यह सफलता की प्रतीक हैं। यदि हमने आठों दिनों के सूत्रों का पालन किया तो सफलता निश्चित ही मिलेगी । इस प्रकार नवदुर्गा की विशेषताओं को जीवन में आत्मसात कर हम सफल प्रबंधक बन सकते हैं । जिससे हमारा जीवन सही दिशा में मुड़ेगा और हम आत्म प्रबंधन से उचित मार्ग पर अग्रसर हो जायेंगे।

आप सभी को चैत्र नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका अपना --

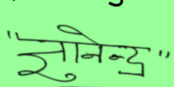

News & Events

मानवता की रक्षा के लिए शंकराचार्य का दर्शन प्रासंगिक - प्रोफेसर राम किशोर शास्त्री

कालेज में हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी ' मानवता की रक्षा के लिए आज शंकराचार्य का दर्शन प्रासंगिक है। जब हम सबमें एकत्व देखेंगे तो हिंसा नहीं होगी । शंकराचार्य का दर्शन समन्वयवादी है। व्यक्ति में ब्रह्म की अनुभूति कराना इस दर्शन की प्रमुख विशेषता है।भारतीय संस्कृति की रक्षा में जितना बड़ा योगदान शंकराचार्य का है उतना किसी अन्य आचार्य का नहीं। ' यह बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रोफेसर राम किशोर शास्त्री ने कहीं। वह 30 मार्च को राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के क्षत्रिय भवन सभागार में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित भारतीय भाषा समिति के सहयोग से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन व प्रथम तकनीकी सत्र को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रहे थे। ' जगद्गुरु श्री शंकराचार्य : भाषा संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता ' विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मुम्बई विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर रामजी तिवारी ने कहा कि शंकराचार्य का व्यक्तित्व असाधारण था । बचपन से ही उनके भीतर लोक कल्याण की प्रबल चेतना थी । उनका दर्शन मनुष्य को सहज और सरल बनाता है । शंकराचार्य द्वारा चारों कोनों पर स्थापित पीठें हमारी सांस्कृतिक चौकियां हैं । विशिष्ट वक्ता वरिष्ठ साहित्यकार कमल नयन पाण्डेय ने कहा आदि शंकराचार्य ने धर्म दर्शन और आध्यात्मिकता को जन सामान्य के लिए सरल बनाया। समूचे विश्व के लिए उनका संदेश महत्वपूर्ण है।उन्होने बताया कि भेद से मुक्ति तभी होगी जब हम अभेद की ओर बढ़ेंगे।शंकराचार्य का दर्शन कभी अंध भक्त नहीं बनाता वह तथ्य और तर्क को महत्व देता है।

स्वागत प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ,आभार ज्ञापन प्रबंधक एडवोकेट बालचंद्र सिंह व संचालन उप प्राचार्य प्रोफेसर निशा सिंह ने किया। समन्वयक डॉ.अमित तिवारी ने संगोष्ठी के विषय व उद्देश्य के बारे में जानकारी दी। संगोष्ठी की शुरुआत में शृंगेरी शारदा पीठ के जगद्गुरु स्वामी भारती तीर्थ व भारतीय भाषा समिति के अध्यक्ष पद्मश्री चमूकृष्ण शास्त्री का वीडियो संदेश सुनाया गया। आयोजक मंडल ने मंचस्थ अतिथियों को अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया।महाविद्यालय के संगोष्ठी कक्ष में सम्पन्न द्वितीय तकनीकी सत्र व समापन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर राधेश्याम सिंह , सह अध्यक्षता प्रोफेसर एम पी सिंह ,संचालन डॉ अमित तिवारी व आभार ज्ञापन डॉ.इन्द्रमणि कुमार ने किया। इस सत्र को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित करते हुए संत तुलसीदास पीजी कालेज के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ सतीश कुमार सिंह ने कहा कि शंकराचार्य ने भारत की राष्ट्रीय एकता को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विशिष्ट वक्ता गनपत सहाय पीजी कालेज के दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ.अभिषेक कुमार ने बताया आद्य शंकराचार्य का मानना था कि आत्मा का निराकरण नहीं हो सकता। संगोष्ठी में अनेक महाविद्यालयों के शिक्षक , शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

News & Events

सकुशल सम्पन्न हुआ राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय शिविर

महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय शिविर 16 मार्च से 22 मार्च तक संस्कृत महाविद्यालय करौंदिया में आयोजित हुआ। शिविर के पहले दिन उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित करते हुए क्षत्रिय शिक्षा समिति के अध्यक्ष एडवोकेट संजय सिंह ने कहा- एन एस एस केवल प्रमाण पत्र में नहीं जीवन में उतरना चाहिए। सेवा कार्य सबकी दिनचर्या का अनिवार्य अंग होना चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने देश को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । '

महाविद्यालय प्रबंधक एडवोकेट बालचंद्र सिंह ने कहा कि शिविरार्थियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपने आसपास के उन सभी बच्चों को विद्यालय जाने के लिए प्रेरित करें जो स्कूल नहीं जा रहे हैं। एडवोकेट रणजीत सिंह ने कहा कि प्रत्येक एन एस एस स्वयंसेवक को आक्सीजन पैदा करने वाला कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने कहा कि विद्या तभी फलित होती है जब हम सेवा करते हैं। सेवाकार्य व्यक्ति को पूर्ण बनाता है । एन एस एस शिविर विद्यार्थियों में सेवा भावना पैदा करने के लिए आयोजित किए जाते हैं। संचालन कार्यक्रमाधिकारी डॉ. प्रभात कुमार श्रीवास्तव व आभार ज्ञापन डॉ.बृजेश सिंह ने किया। इससे पूर्व मुख्यअतिथि ने एन एस एस ध्वज फहराकर व दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का उद्घाटन किया। समारोह में पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर एम पी सिंह , पूर्व प्रबंधक एडवोकेट राम बहादुर सिंह , उप प्राचार्य प्रोफेसर निशा सिंह आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सोमल ने स्वागत गीत व वैभव ने राष्ट्रीय गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक , कर्मचारी व शिविरार्थी उपस्थित रहे। दूसरे दिन शिविरार्थियों ने शिविर स्थल पर पूरे परिसर की सफाई करते हुए स्वच्छता का संदेश दिया। तीसरे दिन हुई संगोष्ठी में गायत्री परिवार से जुड़े हनुमान सिंह ने विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास में समय प्रबंधन की भूमिका विषय पर जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि प्रभाकर सक्सेना ने रिश्ते बचाने पर जोर दिया। चौथे दिन शिविरार्थियों ने कार्यक्रम प्रभारी डॉ बृजेश सिंह के मार्गदर्शन में करौंदिया मलिन बस्ती के लगभग पैंतीस परिवारों में अलग अलग सम्पर्क कर सामाजिक सर्वेक्षण किया। पांचवें दिन प्रथम सत्र में मतदाता जागरूकता रैली व द्वितीय सत्र में हार्टफुलनेस ध्यान योग पर चर्चा आयोजित की गई। छठवें दिन पर्यावरण संरक्षण संगोष्ठी के साथ सहभोज आयोजित हुआ जिसमें महाविद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों, शिक्षकों व कर्मचारियों ने शिविरार्थियों के साथ भोजन ग्रहण किया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी अभिषेक सिंह ने शिविरार्थियों का आह्वान किया कि वे सेवा कार्य से जुड़े। प्रबंधक,प्राचार्य व अतिथियों ने एन एस एस ध्वज उतार कर शिविर का समापन किया। इस अवसर पर परिसर में पौधारोपण भी किया गया।

बहत्तर प्रतिशत रहा ओ लेवल का परीक्षा परिणाम

राणा प्रताप पीजी कालेज में संचालित ओ लेवल पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम बहत्तर प्रतिशत रहा ।

कम्प्यूटर सेंटर प्रभारी प्रमोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि महाविद्यालय में पिछले वर्ष ही ओ लेवल कोर्स शुरू हुआ है। जनवरी में हुई परीक्षा का परिणाम मार्च में आया। परीक्षा में कुल 66 विद्यार्थी शामिल हुए जिसमें 48 छात्र छात्राओं ने सफलता हासिल की । प्रिया मौर्य, आस्था,मंगला प्रसाद तिवारी, क्षमा उपाध्याय, माधुरी,वैभव ,आयुषी द्विवेदी आदि ने अच्छे अंक अर्जित किये।

उर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर हुआ महाविद्यालय

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय राष्ट्रीय नीति के साथ कदम मिलाने में सदैव अग्रणी रहा है। इसी क्रम में महाविद्यालय में सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है। प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि लगभग 26 किलोवाट के इस संयंत्र के लगने के बाद महाविद्यालय उर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो गया है। बिजली की सभी जरूरतें इससे पूरी हो जा रही है। संयंत्र से जहां एक ओर पर्यावरण को फायदा पहुंचेगा वहीं दूसरी ओर अर्थ क्षेत्र में भी मजबूती मिलेगी।

शिक्षाशास्त्र विभाग में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में महिलाओं की बहुआयामी भूमिका' पर संगोष्ठी और प्रश्नोत्तरी का आयोजन

राणा प्रताप पी जी कॉलेज के शिक्षाशास्त्र विभाग में 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में महिलाओं की बहुआयामी भूमिका' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ शिल्पी सिंह ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि भारत वर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है। समाज में अविकृ्तियां पैदा हुई, जिससे महिलाओं का उत्पीड़न हुआ। आजादी के बाद महिलाओं का समाज में सम्मान बढ़ा, शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हे आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है।

News & Events

विषय को निर्मल और उपयोगी बनाने में सहायक होते हैं शोध - प्रोफेसर डी.के.त्रिपाठी

शोध प्रविधि पर हिन्दी विभाग की कार्यशाला

' विषय को नित नवीन बनाने के लिए शोध आवश्यक है। विषय को निर्मल और उपयोगी बनाने में शोध सहायक होते हैं। शोध की सम्भावना हर क्षेत्र में है । किसी कृति को पढ़ समझ कर जो मौलिक भाव हमारे मन में उमड़ते हैं उसी को व्यवस्थित रूप देना ही शोध है। '

नई शिक्षा नीति का एक उद्देश्य युवाशक्ति को शोध से जोड़ना भी है । जब देश का युवा ज्ञान सृजन में लगेगा तो देश विश्वगुरु बनेगा । यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने कहीं। वह महाविद्यालय के संगोष्ठी कक्ष में 21 मार्च को हिन्दी विभाग द्वारा शोध प्रविधि पर आयोजित एकदिवसीय कार्यशाला को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रहे थे।

विशिष्ट अतिथि उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ महमूद आलम ने कहा कि शोध सच्चाई की तलाश है । किसी विषय पर नये सिरे से काम कर उसे अलग तरह से पेश करना ही शोध है। साहित्यिक शोध उलझनों को सुलझाने में मदद करते हैं। अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ इन्द्रमणि कुमार ने कहा कि विषय के अनुसार शोध की प्रकृति और प्रविधि बदलती है। शोध लेखन मौलिक होने के साथ ही आकर्षक और प्रभावशाली होना चाहिए । उन्होंने विद्यार्थियों को शोध क्या क्यों और कैसे विषय पर विस्तृत जानकारी दी।

कार्यशाला का संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि ने किया। ।

पृथ्वी को बचाने के लिए ओजोन परत को बचाना जरूरी - डॉ.आलोक कुमार

धनंजय सिंह स्मृति व्याख्यान ' मानव ने ओजोन मंडल की प्राकृतिक प्रक्रिया को बाधित किया जिससे वायुमंडल खतरे में पड़ गया। ओजोन क्षय के कारण मौसम और जलवायु में परिवर्तन हो रहा है। पृथ्वी को बचाने के लिए ओजोन परत को बचाना जरूरी है।' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ आलोक कुमार ने कहीं।

वह 02 मार्च को महाविद्यालय के संगोष्ठी कक्ष में बाबू धनंजय सिंह स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'ओजोन क्षय एवं उसका प्रभाव' विषय पर आयोजित व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि ओजोन क्षय से पराबैगनी किरणें पृथ्वी पर अधिक पहुंच रही हैं । जिसके कारण गोरी त्वचा पर स्किन कैंसर , आंखों में मोतियाबिंद , शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को कमजोर करना , पौधों में पैदावार की कमी आदि समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं । पूरी दुनिया इससे निपटने के उपाय कर रही है ।अगर हम नई तकनीक का उपयोग करें और सतर्क रहें तो 2075 तक ओजोन परत का नुकसान पूरी तरह से ठीक हो जाएगा।

नये कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं महिलाएं – प्रो. डी के त्रिपाठी-

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हुई संगोष्ठी

'शैक्षिक क्षेत्र में महिलाएं नये कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। आंकड़े बताते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएं पुरुषों से काफी आगे हैं।' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने कहीं।

वह महाविद्यालय के संगोष्ठी कक्ष में 07 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठी को बतौर अध्यक्ष सम्बोधित कर रहे थे। पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर एम पी सिंह ने कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही महिलाओं का सम्मान रहा है । आज भी वैश्विक दृष्टि से महिला सशक्तीकरण में हम बहुत आगे हैं। असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अंजना सिंह ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की उपयोगिता और महत्व पर चर्चा की ।

संगोष्ठी में अपना विचार व्यक्त करते हुए एम ए द्वितीय वर्ष की छात्रा आभा शुक्ल ने कहा कि महिलाओं को प्रोत्साहित कर देश की प्रगति को दुगुना किया जा सकता है। बीए छठवें सेमेस्टर की नंदिनी ने कहा आज सेना , चिकित्सा, ड्राइविंग जैसे हर महत्वपूर्ण क्षेत्र में महिलाएं अग्रणी भूमिका में हैं। बीए चतुर्थ सेमेस्टर की श्वेता सिंह ने कहा कि घर और समाज की बेहतरी के लिए महिलाओं को सशक्त करना ही होगा । बीए द्वितीय सेमेस्टर की सृष्टि सिंह ने बताया कि वर्तमान में सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियां महिलाओं के इर्द-गिर्द ही घूमती हैं यह उनके सशक्तिकरण का सबसे बड़ा प्रमाण है। एम ए चतुर्थ सेमेस्टर के मोहम्मद सैफ अंसारी का कहना था कि महिलाओं को समाज और परिवार में बराबर का हिस्सा मिले तो अनेक समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

संगोष्ठी का संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ मंजू ठाकुर व आभार ज्ञापन डॉ.आलोक पाण्डेय ने किया।
इस अवसर पर उप प्राचार्य प्रोफेसर निशा सिंह, अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ धीरेन्द्र कुमार, हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ इन्द्रमणि कुमार, राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ अभय सिंह समेत पार्थ सारथी द्विवेदी,सत्यम चौरसिया, हर्षवर्धन सिंह,शिवानी सिंह , बबिता, सोमल कनौजिया व नैना आदि विद्यार्थियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

News & Events

शैक्षिक विकास हेतु नई तकनीक से जुड़ना जरूरी - एडवोकेट बालचंद्र सिंह –

स्मार्टफोन पाकर प्रसन्न हुए विद्यार्थी

'शैक्षिक विकास के लिए विद्यार्थियों का नई तकनीक से जुड़ना आवश्यक है। सरकार ने स्मार्ट फोन देकर यह काम आसान कर दिया है।' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्रबंधक एडवोकेट बालचंद्र सिंह ने कहीं। वह 6 मार्च को महाविद्यालय के संगोष्ठी कक्ष में आयोजित स्मार्टफोन वितरण समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे।

समारोह में बीएड के 98 विद्यार्थियों को स्मार्ट फोन वितरित किए गये। निशुल्क स्मार्टफोन पाकर सभी विद्यार्थी काफी प्रसन्न थे। समारोह की अध्यक्षता प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी व संचालन डॉ. प्रभात कुमार श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक डॉ. धीरेन्द्र कुमार, नोडल प्रभारी डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी, डॉ.अमित कुमार तिवारी, डॉ.संतोष सिंह अंश , डॉ.नीतू सिंह, डॉ.अभिषेक शुक्ल, डॉ.बृजेश प्रताप सिंह, सत्येन्द्र सिंह, आदित्य सिंह व रवि सिंह प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। 09 मार्च को बीएससी के 89 व बीकाम के 133 विद्यार्थियों को तथा 11 मार्च को बीए के 648 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन वितरित किए गये। प्राचार्य ने बताया कि सत्र 2022 - 23 में स्नातक तृतीय वर्ष में पंजीकृत या उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए ही शासन से स्मार्ट फोन आया था । कुल 968 विद्यार्थियों को स्मार्टफोन वितरित किए गये।

News & Events

बी.एड. विभाग में सूक्ष्म शिक्षण का समापन हुआ

राणा प्रताप पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज के बी. एड. विभाग द्वारा सूक्ष्म शिक्षण का आयोजन बी. एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों हेतु किया गया। सूक्ष्म शिक्षण समापन समारोह को संबोधित करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ भारती सिंह ने कहा कि माइक्रो टीचिंग एक ऐसी तकनीक है जिसमें एक शिक्षक को शिक्षण कौशल सीखने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इस तकनीक में, शिक्षक को वास्तविक जीवन की स्थिति में रखा जाता है, जिसमें उनके कौशल विकसित होते हैं और उन्हें विषय वस्तु की गहरी समझ प्राप्त होती है।

विभाग द्वारा पाँच सूक्षम शिक्षण कौशल का अभ्यास कराया गया। असिस्टेंट प्रोफेसर शांतिलता कुमारी ने कहा कि सूक्षम शिक्षण एक शिक्षक प्रशिक्षण और संकाय विकास तकनीक है जिसके तहत शिक्षक एक शिक्षण सत्र की रिकॉर्डिंग की समीक्षा करता है, ताकि साथियों / छात्रों से रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त की जा सके कि क्या काम किया है और उनकी शिक्षण तकनीक में क्या सुधार किए जा सकते हैं।

डॉ सीमा सिंह ने कहा कि माइक्रोटीचिंग, एक शिक्षक प्रशिक्षण तकनीक जो वर्तमान में दुनिया भर में प्रचलित है, शिक्षकों को शिक्षण कौशल कहे जाने वाले विभिन्न सरल कार्यों में सुधार करके अपने शिक्षण कौशल को बढ़ाने का अवसर प्रदान करती है। डॉ संतोष अंश ने कहा कि सूक्ष्म-शिक्षण में शिक्षण-कौशल, पाठ्यवस्तु तथा कक्षा अनुशासन आदि कक्षा के हर पक्ष को सरल किया जा सकता है।

इसमें व्यवहारों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है। इसीलिये वांछित परिवर्तनों तक इस प्रविधि द्वारा शीघ्र पहुँचा जा सकता है। पाठ के तुरन्त बाद ही छात्राध्यापक को पृष्ठपोषण (फीडबैक) मिल जाता है। यह शिक्षकों में आत्मविश्वास बनाये रखता हैं। इसमें अधिक नियन्त्रण और नियंत्रित शिक्षण अभ्यास शामिल है। सूक्ष्म शिक्षण से प्रभावी शिक्षण अभ्यास तथा प्रभावी शिक्षक तैयार किये जाते हैं।

यह कक्षा का समय, कक्षा का अनुशासन, कक्षा का आकार जैसे समस्याओं को कम करता है। यह विभिन्न प्रकार के कौशल आत्मसात करने में सहायक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म शिक्षण एक शिक्षक प्रशिक्षु को बेहतर बनाने में अपनी प्रमुख भूमिका निभाता हैं. साथ-ही-साथ शिक्षण को प्रभावशाली बनाता हैं तथा शिक्षार्थियों में विशिष्ट कौशल को बढ़ाता हैं। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने सूक्षम शिक्षण को लेकर अपने अनुभव भी साझा किये। कार्यक्रम का संचालन कनक द्विवेदी, यशस्वी गुप्ता, राम प्रवेश कौशल, सौरभ निषाद ने किया।

बी एड विद्यार्थियों ने आपका बंटी उपन्यास पर किया विमर्श

बी एड प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने मन्नू भंडारी कृत उपन्यास आपका बंटी का अध्ययन करने के उपरांत उस पर विचार विमर्श किया। इस अवसर पर बी एड विभागाध्यक्ष डॉ भारती सिंह, मैडम शांतिलता कुमारी, डॉ सीमा सिंह, डॉ संतोष अंश ने इस उपन्यास के पात्रो से संदर्भित विविध सवाल विद्यार्थियों से किये जिनके विद्यार्थियों ने तार्किक उत्तर दिए।

डॉ भारती सिंह ने कहा कि यह उपन्यास एक नई बात, नए विचार, नई भाषा एवं नया भाव-बोध के साथ हिंदी का पहला सशक्त उपन्यास है।आपका बंटी उपन्यास बाल मनोविज्ञान पर लिखा एक बहुचर्चित और कालजयी उपन्यास है।आपका बंटी उपन्यास का प्रकाशन 1979 में हुआ।

मैडम शांतिलता कुमारी ने बताया कि आपका बंटी' एक कालजयी उपन्यास है. इसे हिंदी साहित्य की एक मूल्यवान उपलब्धि के रूप में देखा जाता है। डॉ संतोष अंश ने कहा कि आपका बंटी उपन्यास एक ऐसी बच्चे की मनो गाथा है जो अपने मम्मी पापा के रिश्तो की डोर है, वह भी उलझा हुआ। मन्नू भंडारी ने जब या उपन्यास लिखा तब तलाक के उतने मामलें नहीं होंगे जितना आज होता है। आज बात-बात रिश्ते टूट जाया करते हैं ,और दूसरी बार हो या पहली बार फिर से रिश्ते जुड़ते भी हैं।

लेकिन इन सबके बीच जिसकी जिंदगी सुनेपन की गठरी बन जाती है वह है बंटी यानि बंटी जैसे हमारे समाज मे अनेक बच्चों की। मन्नू जी ने बंटी के माध्यम से उन तमाम बच्चों की मनोदशा का अतुल्य वर्णन किया है जो माता पिता के विखराव के बीच एक मात्र डोर है। इस उपन्यास की खासियत यह है कि यह एक बच्चे की निगाहों से घायल होती संवेदना का बेहद मार्मिक चित्रण करता है। डॉ सीमा सिंह ने कहा कि मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' बेहद मर्मस्पर्शी, तलाक के बीच पिस रहे एक बच्चे की मनोदशा पर लिखा गया उपन्यास है। इसमें एक बालक की मनःस्थिति के साथ ही स्त्री हृदय की वेदना को भी बड़ी ही बखूबी से लिखा गया। जिन विद्यार्थियों ने इस उपन्यास के अंश का वाचन किया और विमर्श में शामिल हुए उनमें अंशिका सिंह, रशिम यादव, आस्था यादव, सौरभ निषाद, आस्था भट्ट, सेजल यादव, शाहीन अंजुम, प्रतीक्षा, विवेक कुमार निषाद, सुधाकर तिवारी, आदि प्रमुख रूप से सम्मिलित रहे।

GLIMPSE OF COLLEGE